कोई गृहस्थ आश्रम की निन्दा करता है, वही निन्दनीय है जो प्रशंसा करता है वह प्रशंसनीय है। परन्तु तभी गृहस्थाश्रम में सुख होता है, जब स्त्री और पुरुष दोनों परस्पर प्रसन्न, विद्वान्, पुरुषार्थी और सब प्रकार के व्यवहारों के ज्ञाता हो।

प्राचीन इतिहास बतलाता है कि ऋषि मुनि गृहस्थाश्रम में रहकर सब का पथप्रदर्शन करते थे और हमारे पूर्वज नारी जाति का अत्यधिक मान करते थे तभी तो कहा है :–

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता

जहां नारियों का सम्मान होता है वहां देवता निवास करते हैं। महर्षि मनु ने तो यहां तक कह दिया है कि नारी ही घर की शोभा है, जहां गृहिणी नहीं वह घर ही नहीं। जहां पति और पत्नी का एक दूसरे से प्यार है, वही घर स्वर्ग समान है। जहां पुत्र–पुत्रियां आज्ञाकारी हों, वहीं घर स्वर्ग समान है। स्वर्ग किसी ऊपर या नीचे के लोकों का नाम नहीं है, यदि इसी गृहस्थ में आप सुखी हैं तो आप इस जीवन काल में भी 'स्वर्गीय' अर्थात् सुखी बन सकते हैं। स्वर्गीय का अर्थ है स्वर्ग में रहना, जहां प्रत्येक प्रकार का सुख, समृद्धि, सन्तोष हो उसी का नाम स्वर्ग है और ऐसे स्वर्ग की प्राप्ति गृहस्थाश्रम के माध्यम से ही प्राप्त की जा सकती है। इसलिए यह धारणा कि गृहस्थी सुखी नहीं हो सकता और गृहस्थ तो दुःखों का घर है, यह गलत है। गृहस्थ ही एक ऐसा आश्रम है जिसके माध्यम से धर्म, अर्थ, काम और अन्ततः मोक्ष की प्राप्ति संभव है।

विवाह के समय वर वधू का सात कदम एक साथ चलना भी इसी भाव का प्रतीक है। जहां अन्न शारीरिक बल, धन, सुख, सन्तान प्राप्ति, चारों तरफ की प्राकृतिक परिस्थिति का अनुकूल होना कहा है, वहां सातवां कदम रखते हुए वर कहता है,

ओ३म् सखे सप्तपदी भव विष्णुस्त्वा नयतु
पुत्रान् विन्दावहै, बहूंस्ते सन्तु जरदश्टयः

अर्थात् हम सदा साथ रहें, हममें मैत्री भाव रहे, तेरा मन मेरे मन के अनुकूल हो, हम दोनों मिलकर पुत्र–पुत्रियों को प्राप्त करें और वे वृद्धावस्था तक जीने वाले हों।

शास्त्रों में गृहस्थ को एक आश्रम कहा गया है। यह एक मंज़िल है। मंज़िल तक पहुंचने के लिए खड़े रहने से काम नहीं चलता, मंज़िल की तरफ चलना पड़ता है। सप्तपदी का अभिप्राय यही होता है कि वर–वधू को इस बात की प्रतीति कराई जाती है कि गृहस्थाश्रम आराम से बैठे रहने का नाम नहीं है। इस आश्रम के कुछ उद्देश्य हैं, प्रयोजन हैं। इन प्रयोजनों को सिद्ध करने के लिए अलग–अलग नहीं एक साथ चलना होगा कदम से कदम मिलाकर चलना होगा, तभी वे इस आश्रम के उद्देश्य को पा सकेंगे। तभी तो ऋग्वेद में कहा है।

"ओ३म् समञ्जन्तु विश्वेदेवाः समापो हृदयानि नौ।
सं मातरिष्वा सं धाता समुदेष्ट्री दधातु नौ।।"

हम दोनों पति पत्नी निश्चयपूर्वक तथा प्रसन्नतापूर्वक यह घोषणा करते हैं कि हम दोनों के हृदय जल के समान सदा शान्त रहे जैसे प्राणवायु हमको प्रिय है वैसे हम दोनों एक दूसरे के साथ प्रसन्न रहेंगे जैसे धारण करने वाला परमात्मा सबमें मिला हुआ सब जगत् को धारण करता है, वैसे हम दोनों एक दूसरे को धारण करते रहेंगे।

गृह्य सूत्र में लिखा है :–

ओ३म् यदेतद् हृदयं तव तदस्तु हृदयं मम्।
यदिदम् हृदयं मम तदस्तु हृदयं तव।।